

वर्तना स.क्रि. (तत्.) उपयोग में लाना, बरतना, काम में लाना।

वर्तनि स्त्री. (तत्.) संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

वर्तनी स्त्री. (तत्.) भाषा की लिपि का उस के शब्दों को लिखने के लिए सही और शुद्ध प्रयोग।

वर्तमान वि. (तत्.) 1. जो इस समय उपस्थित हो, हाल में मौजूद, तत्क्षण विद्यमान, प्रचलित, चालू पुं. (तत्.) व्याकरण की दृष्टि से वह काल जो अब्द है, भूतकाल और भविष्यत्काल से भिन्न।

वर्ति स्त्री. (तत्.) 1. रत्न दीप अथवा दीपक में प्रयुक्त बत्ती, बत्ती 2. घाव पर लगाने वाली रुई और बत्ती 3. उबटन, पहनावे पर लगाई गई धारी।

वर्तिक पुं. (तत्.) कबूतर के आकार का एक छोटा पक्षी, बटेर पक्षी, वर्तिर।

वर्तिका स्त्री. (तत्.) 1. रुई आदि की बटी हुई बत्ती, जिस की सहायता से तेल अथवा घी को ज्योति रूप में जलाया जाता है 2. चित्रकार की तूलिका, शलाका 3. मादा बटेर, कबूतर के आकार का प्रवासी पक्षी, जिस का गोश्त पकाकर खाया भी जाता है।

वर्तिका आरेख पुं. (तत्.) चित्र कला में पेन्सिल/पैन आदि से बनाया गया रेखाचित्र।

वर्तिका विंदु पुं. (तत्.) हीरे का एक दोष।

वर्तित वि. (तत्.) 1. घुमाया हुआ, चलाया हुआ, गश्त करता हुआ 2. संपादित 3. बिताया हुआ।

वर्ती स्त्री. (तत्.) बरतने वाला, काम में आने वाला 2. चक्कर खाने वाला।

वर्तुल वि. (तत्.) गोलाकार, गोल आकार का पुं. घेरा, गोल आकृति की परिधि।

वर्तुलाकार वि. (तत्.) वृत्त के आकार का, मंडल के आकार का, गोल।

वर्त्म पुं. (तत्.) 1. आवागमन की सहायता से स्वनिर्मित मार्ग, पगडंडी, पथ, रास्ता 2. प्रचलन में आई हुई रीति, निर्धारित प्रथा 3. कार्य क्षेत्र, काम करने का स्थान 4. किनारा 5. आँख की पलक 6. पलकों में होने वाला एक प्रकार का रोग।

वर्दी स्त्री. (देश.) वरदी, किसी विशेष समुदाय, संस्था आदि के कार्यकर्ताओं या विद्यार्थियों, खिलाड़ियों आदि का सुनिश्चित और समान प्रकार का वेश।

वर्ध पुं. (तत्.) 1. वर्द्ध, काटने, चीरने या तराशने की क्रिया, विभाजन 2. पूरा करना, पूर्ति 3. भारंगी, ब्राह्मण यष्टिका 4. सीसा नामक धातु।

वर्धक पुं. (तत्.) 1. काटने वाला व्यक्ति, तराशने वाला व्यक्ति 2. बढ़ई 3. बढ़ने वाला 4. उगने वाला, बढ़ाने वाला, पूर्ति कारक।

वर्धकी पुं. (तत्.) निर्माण कार्य में लकड़ी का काम करने वाला व्यक्ति, खिड़की, दरवाजे आदि लकड़ी के उपकरण बनाने वाला व्यक्ति, बढ़ई।

वर्धन स.क्रि. (तत्.) 1. काटना, कतरना; छीलना 2. पूर्ति।

वर्धन पुं. (तत्.) 1. बढ़ने का कार्य, उगने का कार्य, विकास की स्थिति, उदय की स्थिति 2. काटने का कार्य 3. तराशने का कार्य 4. छीलने का कार्य 5. पूर्ति।

वर्धमती वि. (तत्.) बढ़ती हुई, उन्नति करती हुई, विकास करती हुई।

वर्धमान वि. (तत्.) विकास करता हुआ, आगे बढ़ने वाला, उगने वाला पुं. 1. विष्णु 2. चौबीसवाँ जैन तीर्थंकर अर्थात् महावीर स्वामी 3. एक रहस्यमय रेखा चित्र 4. ऐसा भवन जिसका दक्षिण दिशा में कोई द्वार न हो 5. मीठा नींबू, संतरा 6. नृत्य की एक मुद्रा

वर्धमानमाला स्त्री. (तत्.) प्राचीन काल में, दंड स्वरूप अपमानित करने के लिए पहनाई जाने